4 व 5 फरवरी, 2016 को हैदराबाद, तेलंगाना में आयोजित राज्य लोक सेवा आयोगों के अध्यक्षगण का 18वां राष्ट्रीय सम्मेलन

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में श्री दीपक गुप्ता, माननीय अध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का अभिभाषण

तेलंगाना के माननीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं पंचायती राज मंत्री, श्री के.टी. रामा राव जी,

स्थायी समिति एवं हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, श्री के.एस. तोमर जी,

तेलंगाना राज्य लोक सेवा आयोग के माननीय अध्यक्ष, प्रो. चक्रपाणि घंटा जी,

राज्य लोक सेवा आयोगों के माननीय अध्यक्षगण एवं सदस्यगण,

देवियों और सज्जनों,

मैं, अपनी ओर से, श्री के.टी. रामा राव का स्वागत करना चाहूंगा और धन्यवाद करना चाहूंगा। जैसा कि हम सभी स्वयं देख सकते हैं, किसी भी कार्यक्षेत्र में आईटी की दिशा में अनेक पहलें की जा सकती हैं। मैं, तेलंगाना राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, प्रो. चक्रपाणि घंटा जी, का भी धन्यवाद करना चाहूंगा कि उन्होंने अपने आयोग की स्थापना के प्रथम वर्ष के दौरान ही इस सम्मेलन की मेजबानी की और इसके लिए इतनी बेहतरीन व्यवस्था की। मैं, माननीय मुख्य मंत्री महोदय का भी धन्यवाद करना चाहूंगा कि उन्होंने हमें इस मनोहर और अनूठे स्थान पर आने का अवसर प्रदान किया। यहां आते ही अनायास ही मन में कितनी ही बातें आती हैं जिनके जरिए हम ऐसी समृद्ध संस्कृति और ऐसे सुंदर वातावरण और भारत के पारंपरिक ज्ञान को प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, जो उम्र के पड़ावों को पार करती आज की थकी-मांदी और तनाव भरी दुनिया के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

विभिन्न लोक सेवाओं के लिए पक्षपात रहित और पारदर्शी रूप से मेरिट आधारित भर्ती के दायित्व का निर्वहन करते हुए लोक सेवा आयोग, पहले की तुलना में आज कहीं अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इन संस्थानों की स्वतंत्रता और स्वायत्तता सुनिश्चित करने की भावना को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान में लोक सेवा आयोगों के कार्यों, कर्तव्यों और दायित्वों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।

मैं, यहां यह अवश्य उल्लेख करना चाहूंगा कि जब मैं सार्क देशों के आयोगों के अध्यक्षों की बैठक में शामिल हुआ था, तब वहां संघ लोक सेवा आयोग के कार्य और साख की काफी सराहना की गई थी। आइए, लोक सेवा आयोगों के अध्यक्ष होने के नाते हम सब अपने संस्थानों को सौंपे गए उपर्युक्त दायित्वों के निर्वहन की दिशा में पारदर्शिता व उत्तरदायित्व, प्रक्रियाओं की ईमानदारी, संपूर्ण निष्पक्षता और परिणाम प्रदान करने की रफ्तार के सिद्धांतों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करें।

निजी क्षेत्र के तेजी से उभार के इस दौर में भी, और शायद इसी कारण ही, सरकार के कार्य-संचालन के लिए सर्वश्रेष्ठ योग्यता वाले उम्मीदवारों की नियुक्ति करना अत्यंत आवश्यक है। एक समय, डा.अम्बेडकर ने कहा था कि आयोगों को सबसे कुशल और सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवारों का चयन करना चाहिए। लोक सेवा के क्षेत्र में श्रेष्ठता ही सुशासन का आधार है। लोक प्रशासन का कार्य, चाहे वह नीतिगत स्तर का हो या कार्यान्वयन स्तर का हो, जटिलताओं से भरा है और इस कार्य से जुड़े लोगों का, मन और बुद्धि के स्तर पर, सर्वोत्तम गुणों से परिपूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। यह हम सभी की साझा जिम्मेदारी है कि हम युवा वर्ग को लोक सेवा के महत्व और अनिवार्यता के बारे में नए सिरे से समझाएं ताकि उन्हें सरकार और लोक सेवा के क्षेत्र में करिअर बनाने का प्रोत्साहन प्राप्त हो। हमें सभी माध्यमों के जरिए युवा वर्ग को यह संदेश पहुंचाना चाहिए कि लोक सेवा के क्षेत्र के करिअर पेशेवराना दृष्टिकोण से काफी संतोषप्रद होते हैं और समाज तथा देश के प्रति इसका योगदान काफी महत्वपूर्ण होता है। मुझे आशा है कि हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रमुख सभी वर्गों के सर्वश्रेष्ठ छात्रों को यह संदेश देने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

इस अवसर पर मैं, विभिन्न परीक्षाओं के माध्यम से भर्ती परिणामों की प्रक्रिया में सुधार के परिप्रेक्ष्य में, संघ लोक सेवा आयोग की कुछ नवीन सफलताओं से आपको अवगत कराना चाहूंगा:

- हम वर्ष 2014 तथा 2015 में केन्द्रीय चिकित्सा सेवा परीक्षा का आयोजन कंप्यूटर आधारित परीक्षणों के रूप में करने में कामयाब रहे हैं। इन परीक्षणों का आयोजन, एक ही बार में, देशभर के 41 केन्द्रों पर किया गया और इनमें 30000 से अधिक उम्मीदवार शामिल हुए।

- आवेदन की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन है, जिससे वार्षिक तौर पर 3.3 मिलियन उम्मीदवार लाभान्वित हो रहे हैं और आवेदकों की इस संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

- अपनी कुछेक प्रक्रियाओं में रफ्तार लाकर और कुछेक का पुनर्निर्धारण कर, हम, विभिन्न परीक्षाओं के परिप्रेक्ष्य में, इस कार्य के पूरे चक्र में, अर्थात् आवेदन करने से अंतिम परिणाम घोषित किए जाने तक लगने वाले कुल समय में काफी हद तक कटौती करने में कामयाब रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, सिविल सेवा परीक्षा, 2014 का परिणाम, साक्षात्कार संपन्न होने के मात्र चार दिन बाद घोषित कर दिया गया। इस प्रकार, इस परीक्षा की पूरी प्रक्रिया में लगने वाली समयावधि में 65 दिनों की कटौती की गई। इंजीनियरी सेवा परीक्षा के मामले में इस अवधि में तीन महीने की कमी लाई गई और 2015 के दौरान इस परीक्षा के लिए साक्षात्कार का आयोजन दो बार किया गया।

- विशेषज्ञ समिति द्वारा की गई समीक्षा और नोडल मंत्रालय अर्थात् रेल मंत्रालय के अनुमोदन के उपरांत हमने इंजीनियरी सेवा परीक्षा की योजना तथा पाठ्यक्रम में परिवर्तन की घोषणा की है। इन परिवर्तनों का विवरण सार्वजनिक रूप से संघ लोक सेवा आयोग की वेबसाइट पर समय से पूर्व उपलब्ध करा दिया गया है। इन परिवर्तनों को 2017 से लागू किया जाएगा ताकि परीक्षार्थियों को पर्याप्त समय मिल सके। इससे यह सुनिश्चित होगा कि परीक्षा की पूरी प्रक्रिया एक ही कैलेंडर वर्ष के दौरान पूरी कर ली जाए। उम्मीद है कि इससे और भी अधिक संख्या में बेहतर छात्र इन सेवाओं के लिए परीक्षा देंगे।

- हमने आयोग द्वारा आयोजित अन्य परीक्षाओं की योजना और पाठ्यक्रम की भी समीक्षा की है। इसी आधार पर भारतीय आर्थिक सेवा (आईईएस)/भारतीय सांख्यिकी सेवा (आईएसएस) तथा भूविज्ञानी परीक्षा में भी परिवर्तन किए गए हैं, जो कि 2016 से लागू होंगे।

- सिविल सेवा परीक्षा प्रणाली की समीक्षा के लिए विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है।

- वर्ष 2014 तथा 2015 के दौरान, आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के दायरे में विस्तार हुआ है। सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा, 2015 का आयोजन हमने देशभर के 71 शहरों में किया था, जबकि इसकी तुलना में 2013 के दौरान यह संख्या 45 तथा 2014 में 59 थी। सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के केन्द्रों की संख्या भी 19 से बढ़कर 23 हो चुकी है।

आज का दौर अत्यंत उत्साहवर्द्धक दौर है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) देश के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक भूदृश्य में बुनियादी परिवर्तन ला रही है। डिजिटल क्रांति, देश की दीर्घकालिक आर्थिक उत्पादक क्षमता को गई गुना बढ़ा देगी। सरकार में शीर्ष स्तर की नियुक्तियों के कार्य से जुड़े संवैधानिक निकाय होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि हम

आईसीटी को अपनी प्रणालियों तथा प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग बनाएं ताकि न केवल हमारी कुशलता बढ़े बल्कि अपेक्षित परिणाम भी प्रभावी ढंग से प्राप्त किए जा सकें। स्पष्ट है कि कंप्यूटर आधारित परीक्षण ही भविष्य की राह हैं। हमें आशा है कि सम्मेलन के दौरान आईटी क्षेत्र के विशेषज्ञों से हमें इस दिशा में उपलब्ध अन्य संभावनाओं की जानकारी मिलेगी।

मैंने प्रारंभ में परिणाम प्राप्त करने की रफ्तार का उल्लेख किया। इस दिशा में हमने अपनी प्रक्रियाओं में परिवर्तन के अनेक उपाय किए हैं। इसके फलस्वरूप पिछले वर्ष के दौरान संघ लोक सेवा आयोग ने सीधी भर्ती के मामलों में कार्रवाई में लगने वाले कुल दिनों की संख्या को 261 से घटाकर 209, विभागीय पदोन्नति समिति के मामलों में 62 से घटाकर 33, प्रतिनियुक्ति के मामलों में 180 से घटाकर 79, अनुशासनात्मक मामलों में 180 से घटाकर 114 और भर्ती नियम संबंधी प्रस्तावों के अनुमोदन के मामले में 33 से घटाकर 20 दिन करने में कामयाबी पाई है। इस प्रयास में हमारी एकल खिड़की प्रणाली भी मददगार सिद्ध हुई है।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल सचिव को मैंने यह भी सुझाव दिया है कि सभी विभागों के भर्ती नियमों को अद्यतन करने और इस प्रकार इन पर कार्रवाई में लगने वाले कुल समय में कमी लाने के उद्देश्य से विशेष अभियान चलाया जाए। सभी राज्य भी ऐसा कर सकते हैं।

अब मैं कुछ विषयांतर करूंगा। आज की दुनिया में आवश्यकता इस बात की है कि दीर्घकालिक विकास के मार्ग को जल्द से जल्द अपनाया जाए। प्रत्येक संस्थान को इस दिशा में योगदान करना चाहिए। यह सम्मेलन स्थल इसका बेहतरीन उदाहरण पेश करता है। मुझे, आपको यह जानकारी देते हुए खुशी है कि संघ लोक सेवा आयोग ने धौलपुर हाऊस स्थित अपने परिसर में ग्रिड से जुड़े 100 किलोवाट के सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना कर अपनी ग्रिड बिजली की खपत घटाई है। आयोग के भवन की छत पर लगे ये सौर पैनल, नई दिल्ली नगर परिषद(एनडीएमसी) क्षेत्र में अपनी तरह की पहली परियोजना है। आयोग परिसर में लगे 600 किलोवाट के संयंत्र का आज सुबह दौरा कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। ईईएसएल के सहयोग से हमने अपने परिसर में ऊर्जा कुशलता की परियोजना भी प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य एलईडी लाइटों और उच्च ऊर्जा कुशलता वाले एसी तथा पंखों का इस्तेमाल बढ़ाना है। हम अपशिष्ट जल ट्रीटमेंट संयंत्र भी स्थापित कर रहे हैं, जिससे पानी की खपत घटेगी और इस्तेमाल हो चुके पानी को दोबारा प्रयोग करने योग्य बनाया जा सकेगा। हमें, स्वच्छ भारत

अभियान के अंतर्गत भी पूरे अंक प्राप्त हुए और अब हमारा प्रयास है कि हम एक हर्बल उद्यान बनाएं।

संघ लोक सेवा आयोग ने पिछले वर्ष हुए इस सम्मेलन के दौरान चर्चा में उठे विषयों पर अपनी ओर से की जाने वाली समस्त अपेक्षित कार्रवाई पूरी पर ली है। साथ ही हम आगे की पहलों के लिए भी अपना पूरा समर्थन प्रदान करने का विश्वास दिलाते हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि सम्मेलन के दौरान हमारा विचार-विमर्श, आने वाली चुनौतियों का सामना करने और लोक सेवा के बृहतर उद्देश्य के प्रति स्वयं को एक बार फिर समर्पित करने के हमारे संकल्प को दृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अत्यंत हर्ष से इस सम्मेलन का शुभारंभ करता हूं।

जय हिन्द !